CLASSMATE
Date :
Page :

अपराध के भौगोलिक कारक
(Geographical factors of crime)

अपराध की आधुनिक परिभाषा से यह स्पष्ट है कि अपराध एक सामाजिक प्रक्रिया है फिर भी अति प्राचीन काल से यह धारणा प्रचलित है कि अपराधी व्यवहार और भौगोलिक कारकों में अति निकट का सम्बंध है और उसी के अनुसार यह विश्वास कर लिया गया कि अपराधी व्यवहार देश की प्राकृतिक दशा, जलवायु, ऋतु आदि द्वारा प्रभावित होता है। यह धारणा निम्नलिखित विवेचना से और भी स्पष्ट हो जाएगी।

1. प्राकृतिक दशा (Physical features) — श्री लॉम्ब्रोसो (Lombroso) का विश्वास था कि व्यक्ति के विरुद्ध अपराध मैदानी क्षेत्रों में सबसे कम, पहाड़ी प्रदेशों की अपेक्षा मैदानी भागों में बलात्कार की घटनाएं अधिक होती हैं। उनका यह भी कथन था कि इटली के उन प्रदेशों में जहाँ प्राकृतिक दशाओं के कारण सबसे अधिक मलेरिया होता है, वहाँ व्यक्ति के विरुद्ध अपराध की दर भी अत्यधिक है। इसी प्रकार कुछ विद्वानों का कथन है कि समुद्र तट के प्रदेशों में देश के भीतरी भागों की अपेक्षा अधिक अपराध होते हैं।

2. जलवायु (Climate) — अनेक भूगोलशास्त्रियों ने प्रमाणित करने का प्रयत्न किया कि जलवायु और अपराधी व्यवहार का एक घनिष्ठ सम्बंध है। उदाहरणार्थ, श्री मॉन्टेस्क्यू ने अपनी पुस्तक Spirit of Laws में यह विचार प्रकट किया है कि जैसे-जैसे भूमध्य रेखा की ओर बढ़ते जाते हैं वैसे-वैसे अपराध की दरें भी बढ़ती जाती हैं और उत्तरी या दक्षिणी ध्रुवों की ओर बढ़ने के साथ-साथ मद्य सेवन अधिक मिलता है। इसी प्रकार श्री क्वेटलेट का विश्वास था कि गर्म जलवायु वाले प्रदेशों में व्यक्ति के प्रति अपराध तथा हिंसात्मक अपराध अधिक होते हैं, जबकि ठंडे जलवायु वाले प्रदेशों में सम्पत्ति के प्रति अपराधों का आधिक्य होता है। प्रिंस पीटर क्रोपोटकिन (Prince Peter Kropotkin) ने जलवायु के आधार पर नरहत्या की संख्या को हिसाब लगाकर निकालने तक की विधि को प्रतिपादित किया और वह इस प्रकार था; "महीने के औसत तापक्रम को लीजिए, इसे सात से गुणा कीजिए, उसमें औसत हवा की आर्द्रता को जोड़ दीजिए और फिर दो सौ गुणा कीजिए — बस आपको उस महीने में की गई नर हत्याओं की संख्या मालूम हो जायेगी।"

(3) ऋतु (Seasons) — कुछ विद्वानों ने ऋतु-परिवर्तन और अपराधी व्यवहारों में भी सम्बंध स्थापित करने का प्रयत्न किया। उसके अनुसार जाड़े में

में सम्पत्ति के विरुद्ध अपराधों की संख्या बढ़ती है और गर्मियों में व्यक्ति के विरुद्ध अपराध अधिक होते हैं। श्री डेक्सटर ने तो मौसम के बदलने के साथ-साथ बनाया। इस कैलेण्डर के अनुसार शिशुहत्या जनवरी, फरवरी, मार्च और अप्रैल के महीनों में बढ़ जाती है, नरहत्या और घातक आक्रमण जुलाई में; पितृहत्या जनवरी और अक्टूबर में, युवा लोगों पर बलात्कार सबसे अधिक मई, जुलाई और अगस्त में और सबसे कम दिसम्बर में, युवा लोगों पर बलात्कार सबसे अधिक जून में, सबसे कम नवम्बर में, और सम्पत्ति के विरुद्ध अपराध सबसे अधिक दिसम्बर और जनवरी में होते हैं। श्री डेक्सटर ने अपने अध्ययन में न्यूयार्क शहर में गर्मी महीनों में बैरोमीटर का पारा गिरने पर, कम आर्द्रता के दिनों में, बदली के दिनों में अपराध की दरों को बढ़ता हुआ पाया।

समालोचना (Criticism) — (1) भौगोलिक कारकों को आधुनिक अपराध अपराधशास्त्री अधिक महत्व देने के पक्ष में नहीं है क्योंकि भौगोलिक कारणों के प्रभाव प्रत्यक्ष नहीं; अपितु अप्रत्यक्ष होते हैं और कभी-कभी तो इस अप्रत्यक्ष प्रभाव को भी प्रमाणित करना कठिन हो जाता है। सामान्य रूप से अनेक अपवाद इस सम्बन्ध में मिल सकते हैं। अगर भौगोलिक अवस्थाएं ही अपराध के प्रकार और संख्या में आकाश-पाताल का अंतर होता है। (2) भौगोलिक कारकों को अपराध का अप्रत्यक्ष कारण इसलिए भी नहीं मानना चाहिए क्योंकि ऐसा भी देखा गया है कि किसी एक वर्ष या निरंतर दो चार वर्ष अपराध की दरें एकाएक घट या बढ़ जाती हैं जैसे - भारत में अपराध की दर अच्छी फसल होने पर घटती है और फसल खराब हो जाने पर बढ़ती है। (3) उसी प्रकार ऋतुओं का प्रभाव अपराधी व्यवहारों पर अप्रत्यक्ष इस अर्थ में भी है कि विभिन्न ऋतुओं में मनुष्यों के आपस में सम्पर्कों में भी अंतर पाया जाता है, जैसे जाड़े की ऋतु में मानव सम्पर्क कम होते हैं, इस कारण व्यक्ति के विरुद्ध अपराध भी कम होते हैं।

समाप्त